RAM LAL ANAND COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्
1964

संभव
2018

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, रामलाल आनंद महाविद्यालय

हार का नशा

केशव झा

कि मुझसे जीत कर भी तू क्या खाक जीत पाया है
कि तेरी जीत मे कहीं मेरा ही तो साया है
तू ही तो कहता है कि कण-कण में तू समाया है
कि मुझसे जीत कर भी तूने मुझको ही जिताया है
कि तुझसे हार कर मेरा यथार्थ मुझसे कह रहा
ये हार नहीं यह जीत है, यह शौर्य का प्रतीक है
कि तुझसे हार कर मेरा, सौभाग्य ही तो खुल गया
मेरा वो अहम मेरी जमीं से आकर मिल गया
मैंने तो सोचा था मुझसा नहीं कोई कहीं
पर तुझसे मिलकर मुझे, मेरा विरोधी मिल गया
कि क्या लड़ाई थी हमारी, मेरी रूह तक हिल गई
जर्रा-जर्रा कांपा उस दिन, इत्तिफाक से जीत तुझे मिल गई
मै जानता हूं कलम कि तलवार तेरे हाथ है
मेरे नसीब की लकीरों मे कहां वो बात है
कि हार मुझको भा गया, एक नशा सा छा गया
सच कहूं इस हार में, मुझे मजा सा आ गया

अनुक्रमणिका

प्राचार्य का संदेश	1
प्रभारी की कलम से	2
लेख	
मोबाइल, इंटरनेट और युवा : यश चोरड़िया	3
अब हवा से पानी बनाएगी मशीन : अभिषेक	4
विज्ञान में स्त्रियां और स्त्रियों का 'विज्ञान' : दीपाली	5
किसानों की आय बढ़ाने में लगा आयुर्वेट : विभा कुमारी और आशुतोष मिश्रा	6
मुस्लिम महिलाओं को अब मिली आजादी : आशुतोष मिश्रा	8
पुरुषवादी समाज और स्त्री : श्रेया उत्तम	9
कैसे हो रही महिलाओं की सुरक्षा : अनुज यादव	10
गणेश शंकर विद्यार्थी की पत्रकारिता : पारसमणि	11
हाशिए पर जाती जमीनी पत्रकारिता : अर्शियान आरिफ खान	12
हिंदी को लेकर नजरिया बदलिए : अवधेश पैन्यूली	13
हिंदी को बढ़ावा देना होगा : महेंद्र	14
सरदार सरोवर बांध विवाद और सत्याग्रह : विशाल जोशी	15
देश की तरक्की में बाढ़ एक गंभीर समस्या : ऋतुज दत्त राय	16
पर्यावरण पर आंदोलनों का प्रभाव : सृष्टि बहुगुणा	18
सवालों के घेरे में देश की सुरक्षा : सौरभ मिश्रा	20
पुस्तक मेले में धार्मिक स्टालों की धूम : नीरज सिंह	21
कविता	
हार का नशा : केशव झा	फ्रंट इनर
मां के आंचल में बचपन : प्रज्ञा सैनी	22
वो पर्दा बड़ा गंभीर था : सौरभ मिश्रा	22
किसान बेचारा : प्रीति	बैक इनर
रिपोर्ट	
गतिविधियों के केंद्र में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग	23

आहंग संस्था द्वारा मंचित नाटक 'हिन्दू कोड बिल' में बी.जे.एम.सी. द्वितीय वर्ष के छात्र गुफरान अहमद, अर्पित पुरुषोत्तम और जतिन शर्मा ने अभिनय किया

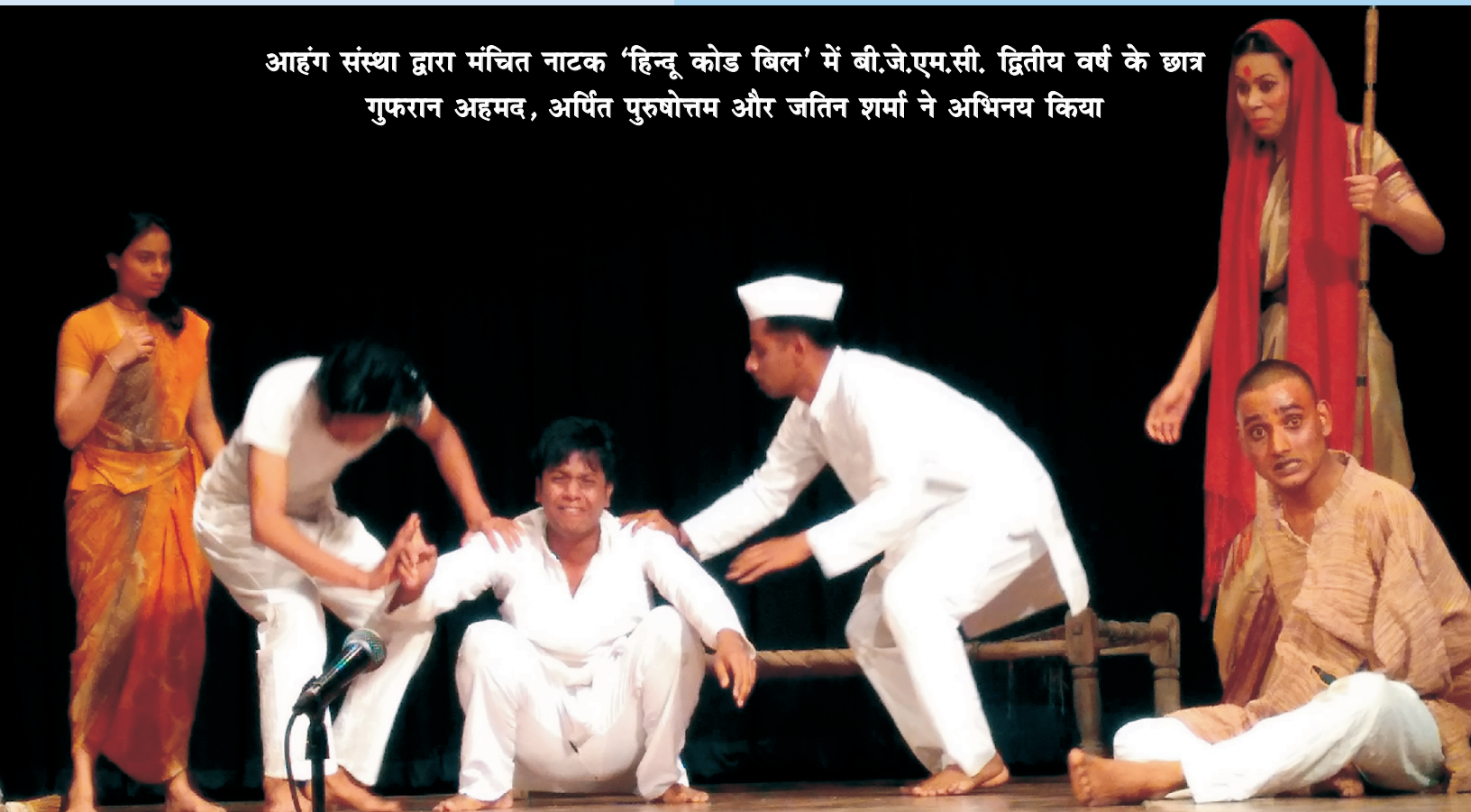

संरक्षक मण्डल

प्राचार्य

डॉ. राकेश कुमार गुप्ता

प्रभारी

डॉ. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक मण्डल

संपादक

अनुज यादव

उप-संपादक

पवन मिश्रा

संपादन सहयोग

अमरेश कुमार
अभिषेक कुमार
शोभित श्रीवास्तव
प्रीति
आशुतोष मिश्रा

कार्टून

प्रीति

फोटो

डॉ. मानवेश नाथ दास
डॉ. अटल तिवारी
लकी आनंद

मुद्रक :
के.आर. प्रिन्टर्स
जी-2/122, द्वितीय तल,
सैक्टर-16, दिल्ली-110089
मो. : 9810046257

नोट : 'संभव' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार लेखकों के अपने हैं उनसे संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संदेश

सबसे पहले मैं हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग को बधाई देता हूँ कि विभाग इस वर्ष भी 'सम्भव' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। ये पत्रिका विभाग के विद्यार्थियों की प्रतिभा का आईना है। कहा जाता है कि सौ किताबें भी किसी व्यक्ति को वह सब नहीं सिखा सकतीं जितना कि वास्तविक जीवन का एक अनुभव। जो काम स्वयं कर लिया जाता है वह जीवन भर काम आता है। मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूँ इसलिए प्रयोग की महत्ता को समझता हूँ। इस पत्रिका को मैं पत्रकारिता की प्रयोगशाला में किया गया प्रयोग मानता हूँ। मुझे इस बात की खुशी है कि विद्यार्थी स्वयं पत्रिका निकाल कर पत्रकारिता का अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। मुझे इस बात की भी खुशी है कि विभाग का स्टूडियो तैयार हो गया है। जिसमें काम करके विद्यार्थी अपने हुनर को अधिक चमका सकते हैं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जगह बना सकते हैं। आज विभाग के विद्यार्थी अपनी सक्रियता से न केवल महाविद्यालय बल्कि विश्वविद्यालय स्तर पर हमारा नाम रोशन कर रहे हैं।

पत्रकारिता एक ऐसा क्षेत्र है जो समाज के बड़े हिस्से को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। इसलिए पत्रकारों का दायित्व बहुत बड़ा है क्योंकि पत्रकार की लेखनी, एंकर के शब्द और कैमरामैन के लेंस से दिखाया गया सत्य हज़ारों-लाखों लोगों को प्रभावित करता है और यदि वह धन, बल और सत्ताओं के दिए गए लालच को स्वीकार कर लेता है वह अपने दायित्वों से पलायन कर जाता है। यह स्थिति लोकतंत्र को कमजोर कर सकती है। युवा पत्रकारों को अपने दायित्वों को याद रखना होगा। भारत एक उभरता हुआ समाज और राष्ट्र है, जिसका भविष्य युवाओं के हाथ में है। वे ही हैं जो भारतीय समाज और दुनिया को नई दिशा दे सकेंगे। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि जब ये युवा यहाँ से पढ़ने के बाद पत्रकार बनेंगे तो समाज के हित में काम करेंगे। आने वाले वर्षों में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग और अधिक तरक्की करे, यह मैं कामना करता हूँ।

एक बार फिर 'संभव' पत्रिका के रचनाकारों और सम्पादकों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ।

डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
प्रधानाचार्य

सोचें-विचारें-लिखें और जिएँ

आज एक चक्र पूरा होता सा लगता है। वर्ष था 2008। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार को शुरू हुए कुछ वर्ष बीत चुके थे। विभाग की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी। पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए लिखना और छपना दोनों आवश्यक हैं। यह देखते हुए मैं अनुभव कर रहा था कि वर्ष में ही सही पर विभाग से एक पत्रिका अवश्य निकलनी चाहिए। विभाग के पास धन का अभाव था। विद्यार्थियों को प्रस्ताव दिया गया तो उन्होंने सहर्ष इसे स्वीकार कर लिया। कुछ लेख, कविताएं और चित्र एकत्र किए गए। उन दिनों विभाग में उथल-पुथल चल रही थी, जिसकी वजह से कुछ रचनात्मक कर पाना सम्भव नहीं लग रहा था। वहीं पर यह विचार आया कि इस पत्रिका का नाम 'सम्भव' रखा जाएगा। अपने कम्प्यूटर पर इसे डिज़ाइन कर प्रिंट निकाले और स्पाइरल बाइंडिंग में इसे विद्यार्थियों को सौंप दिया। हमारे इस प्रयास की अनेक लोगों ने सराहना की।

आज आप से इस कहानी को साझा करने का उद्देश्य मात्र इतना ही है कि आप इस बात को समझें कि भले ही कितनी कठिनाइयाँ हों पर यदि आप ठान लें तो क्या कुछ सम्भव नहीं है। आज हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग निरंतर आगे बढ़ रहा है। आधुनिक उपकरणों से लैस हमारा स्टूडियो तैयार है। मीडिया लैब के लिए भी जल्द ही नए उपकरण लाए जा रहे हैं। हमारे विद्यार्थी नित नई योजनाएं बना रहे हैं। कुछ टीवी कार्यक्रम बना रहे हैं तो कुछ डॉक्यूमेंट्री। विभाग कुछ हटकर करने को तैयार है। एक नई ऊर्जा का संचार हम अनुभव कर रहे हैं। इस सब के लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर और विभाग की तरफ से आदरणीय प्रधानाचार्य डॉ. राकेश गुप्ता जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उनके मार्गदर्शन और सहयोग से ही यह सम्भव हो पाया। मैं अपने साथी शिक्षकों और विद्यार्थियों को धन्यवाद देता हूं जिनका सहयोग निरंतर हमें मिला। साथी अटल तिवारी जी का विशेष आभार जिन्होंने इस योजना को अमलीजामा पहनाया।

यह तो रही पत्रिका की बात, पर बात यहीं पर समाप्त नहीं होती है। मैं इसे एक शुरुआत मानता हूं। अब आगे बढ़ने का समय है। एक ऐसे समय में जहां आपके सोचने-विचारने और लिखने को बाधित किया जाता हो, एक ऐसे समय में जहां आपकी पहचान को जाति-धर्म-जेंडर के खांचे में बंद किया जा रहा हो, एक ऐसे समय में जब अंधराष्ट्रवाद सिर उठा रहा हो और एक ऐसे समय में जहां मनुष्यता को अप्रासंगिक सिद्ध किया जा रहा हो, वहां यह लाज़िमी है कि आप बेहतर मनुष्य समाज बनाने का सपना लेकर आगे बढ़ें। सोचें-विचारें-लिखें और जिएं।

डॉ. राकेश कुमार

मोबाइल, इंटरनेट और युवा

यश चोरड़िया

सुबह सबसे पहले हमारे देश में माता-पिता को प्रणाम करने की एक परम्परा लम्बे समय से चली आ रही थी, पर आज सबसे पहले सुबह मोबाइल नामक वस्तु प्रणाम किया जाता है। इक्कीसवीं सदी मे स्मार्ट फोन ने युवाओं की दिनचर्या को ही बदल कर रख दिया है। अब कपड़े, सब्जी, चॉकलेट से लेकर टीवी खरीदने के लिए दुकानों मे घूमना नहीं पड़ता। अब यह सामान मोबाइल इंटरनेट के माधयम से आपके घर तक पहुंचा दिया जाता है। पानी एवं बिजली बिल के भुगतान के लिए अब आपको घंटों लाइन में खड़े रहने की कोई जरूरत नहीं। आप अपने फोन पर क्लिक करें और आपका भुगतान संबंधित विभाग में ही जाएगा। पहले अधिकतम व्यक्ति एक या दो खेलों को खेलता था और उनमें रुचि रखता था। पर अब तो बिना किसी मैदान में कदम रखकर भी वह अपने फोन पर ही क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी आदि खेलों का लुफ्त उठा सकता है और उसके साथ ही नये तरह के मोबाइल गेम पर भी अपने हाथ आजमा सकता है। अब कोई भी अपने फोन के माध्यम से एवम् इंटरनेट की मदद से दुनिया की किसी भी प्रतिष्ठित जगह एवम् व्यक्ति की जानकारी तुरंत ही हासिल कर सकता है।

मोबाइल का सबसे भयानक रूप यह है कि आईएसआईएस जैसी खतरनाक विचारधारा वाले आतंकी संगठन हजारों किलोमीटर दूर होने के बावजूद दूसरे देशों के युवाओं को अपनी विचारधारा की तरफ आकर्षित करने में सफल हो रहे हैं। आज एक बात कही जा रही है कि गुम हो रहा है बचपन, जो कि एकदम सही है। जब से मोबाइल और इंटरनेट ने युवाओं और बच्चों की जिंदगी में प्रवेश लिया है तब से बच्चों में से वो बचपना कहीं गुम सा हो गया है। अब बच्चों को गली में खेलने का आनंद, बारिश का आनंद, पापा के साथ घूमने का आनंद, मां की गोद मे लेटने का आनंद, भाई बहनों से अपनी बात मनवाने के लिए लड़ने का आनंद, दोस्तों के साथ आमने सामने बैठकर गप्पें लगाना और उन पर जोर जोर से हंसने का आनंद एवं जिन्दगी को जीने का आनंद सब कुछ मोबाइल नामक वस्तु के अन्दर समा गए हैं। शायद आज के अधिकतम युवा इन आनंदों का लुत्फ नहीं उठा पा रहे हैं। वैसे तो मोबाइल इंटरनेट ने दुनिया को बहुत छोटा सा बना दिया है पर वास्तविकता में सबके पास होने के बावजूद आदमी अकेला महसूस करता है तभी तो विश्व भर के युवाओं में डिप्रेशन के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। पर जरा रुकिए, हमने अभी तो सिक्के का एक ही पहलू देखा है। कई अध्ययन में यह बात सामने आई है कि युवा दिन में कई घंटे अपना समय फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि साइटों पर बर्बाद कर रहें हैं। बेड से लेकर बाथरूम, कक्षा से लेकर क्रिकेट ग्राउंड पूरे समय युवाओं के हाथ में फोन और कानों में हेडफोन होते हैं। एक तरफ मोबाइल आंखों पर हानिकारक प्रभाव दौड़ाता है तो दूसरी तरफ हेडफोन कानों में एक घंटे में हजारों बैक्टीरिया अंदर डालता है। युवा अपने स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान से ज्यादा मोबाईल इत्यादि चीजों में ज्यादा खर्च करते हैं।

अब हवा से पानी बनाएगी मशीन

अभिषेक

लीजिये जनाब विज्ञान का एक और करिश्माई तोहफा हमारे लिए। सुना है कि अब हम हवा को पीकर अपनी प्यास भुजा लेंगे। मतलब यह है कि जिस तरह से वैज्ञानिक कुछ न कुछ खोज और शोध करते रहते हैं उसी का नतीजा है कि वैज्ञानिकों ने एक नया यंत्र खोज लिया है जो हवा को पानी में बदल सकता है। इस तरह पीने के पानी की किल्लत दूर करने के लिए अब एक अनोखी मशीन बनाई गई है। यह मशीन हवा से पानी निकालती है। उम्मीद की जा रही है कि माइक्रोवेव के बाद यह सबसे उपयोगी घरेलू मशीन की खोज साबित होगी।

यह मशीन उसी तकनीक पर आधारित है जिस पर डी-ह्यूमिडीफायर काम करता है। वॉटर मिल नामक नई मशीन हवा से पीने के लिए पानी तैयार कर सकती है। मशीन बनाने वाली कंपनी का कहना है कि यह विकसित देशों में न सिर्फ बोतलबंद पानी का विकल्प पेश करेगी बल्कि रोजाना पानी की कमी से जूझ रहे लाखों लोगों के लिए भी उपयोगी साबित हो सकती है।

मशीन नमी वाली हवा को एक फिल्टर के जरिए खींच लेती है। मशीन के अंदर एक कूलिंग एलीमेंट होता है। यह नम हवा को ठंडा कर देता है, जिससे संघनित होकर पानी की बूंदें निकलती हैं। मशीन एक दिन में 12 लीटर तक पानी बना सकती है। तूफानी मौसम में हवा में नमी बढ़ जाती है। ऐसी सूरत में वॉटर मिल ज्यादा पानी तैयार कर पाएगी।

वॉटर मिल को बनाते वक्त इस बात का ध्यान रखा गया है कि इससे पर्यावरण में प्रदूषण न फैले। मशीन के इस्तेमाल में उतनी ही बिजली की खपत होती है, जितनी आम तौर पर रोशनी के लिए तीन बल्ब जलाने में होती है। वॉटर मिल ईजाद करने वाले जॉनथन रिची ने कहा है कि पानी की मांग बढ़ती ही जा रही है। जल वितरण व्यवस्था भरोसेमंद नहीं होने के कारण लोग इससे निजात पाना चाहते हैं।

मशीन करीब तीन फुट चौड़ी है। उम्मीद है कि जल्दी ही यह ब्रिटेन के बाजार में आ जाएगी। तब इसकी कीमत 800 पाउंड रहने का अनुमान है। मशीन का उत्पादन कनाडा की एलीमेंट फोर नामक फर्म कर रही है। हालांकि यह मशीन उन इलाकों में कारगर नहीं है जहां सापेक्ष नमी 30 फीसदी से कम हो। लेकिन ब्रिटेन में यह 70 फीसदी से ज्यादा है, इसलिए वहां मशीन की सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। दूसरी ओर पर्यावरणविदों का दावा है कि जलवायु परिवर्तन के कारण 2080 तक दुनिया में आधी आबादी को पानी की किल्लत का सामना करना पड़ेगा। हर पांच में से एक इंसान को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। ऐसे में इस मशीन से उम्मीद की किरण जगी है।

इसका दूसरा पहलू यह है कि इसके खतरनाक परिणाम भी सामने आएंगे। जब नमी ही नहीं बचेगी तब क्या करेंगे, उस जल को पीकर। कभी सोचा किसी ने। अभी तो सब कुछ अच्छा लगेगा। पर यह खतरे की घंटी है, पर्यावरण के विनाश के लिए। इसके लिए हमें अभी से सचेत होना होगा।

विज्ञान में स्त्रियाँ और स्त्रियों का 'विज्ञान'

दीपाली

विज्ञान शब्द का अर्थ ही है कि पूरे विश्व का ज्ञान। वैज्ञानिक इस विश्व में घट रही विभिन्न क्रियाएँ व इसमें रहने वाले विभिन्न पशु-पक्षियों के ज्ञान से ही नई तकनीक और खोज सामने लाते हैं, जो मनुष्यों को बेहतर जीवन दे सके। लेकिन इन वैज्ञानिकों की ही पड़ताल करें तो पता चलता है कि भारत में ही नही पूरी दुनिया में स्त्री वैज्ञानिक की अत्यंत कमी है। इसमें भी कम संख्या उन स्त्रियों की है, जो शोध में आगे आती हैं।

सामान्य तौर पर धारणा यह है कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित में पुरुषों के मुकाबले औरत कमजोर होती है। अपने समाज के उदाहरणों से बच्चों में भी इस बात की कल्पना में केवल पुरुष आते हैं। अपने घर-परिवार, स्कूल और मीडिया, कही भी बच्चों को स्त्री रोल मॉडल नही दिखाई जाती हैं और नतीजा यह होता है कि वे इसी सोच के साथ बड़े होते हैं और इन पूर्वाग्रहों का निर्वाह करते हैं। स्त्रियां स्वयं अपने परिवार से विज्ञान व संबंधित विषयों में शोध को अपने करियर के तौर पर नहीं देखती हैं। पढ़ी-लिखी औरतें भी इन बंधनों से खुद को आजाद करने में असमर्थ हैं। आज भी स्त्री वैज्ञानिक नई तकनीक लागू करने से पहले पूजा जरूर करती हैं। इसका सबसे खतरनाक रूप सामने आता है जब आईआईटी दिल्ली से पीएच.डी. कर रही स्त्री अपने पति द्वारा दहेज के लिए बार-बार प्रताड़ित करने पर आत्महत्या कर लेती है। अन्य क्षेत्रों की भांति विज्ञान के क्षेत्र में भी औरत पर किए गए यौन शोषण के मामलों को दबा दिया जाता है।

इन घटनाओं को बड़े स्तर पर देखने से सवाल उठता है कि आखिर हमारे स्कूल-कॉलेज में यह कैसा विज्ञान पढ़ाया जा रहा है, जो लोगों को सोचने पर मजबूर नहीं कर रहा? वैज्ञानिकों का काम है मनुष्य जाति की बेहतरी के लिए नए रास्ते ढूंढना, पर आज पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य प्रजाति के अंत होने का प्रश्न बन कर हमारे सामने खड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे वैज्ञानिक सिर्फ उनके विकास को लाने में लगे हैं जिनके पास उनकी जेबें भरने के लिए स्रोत हैं।

किसानों की आय बढ़ाने में लगा आयुर्वेट फाउंडेशन

विभा कुमारी और आशुतोष मिश्रा

खेती और पशुपालन इस देश की एक ऐसी व्यवस्था है जो न सिर्फ इस देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करती है अपितु देश के 60 प्रतिशत मजदूर और किसानों को रोजगार भी देती है, लेकिन कृषि प्रधान देश और दुनिया के आधे पशु संख्या वाले भारत में पिछले कुछ वर्षों से खेती-बाड़ी घाटे का सौदा बनती जा रही है। ऐसे में खेती और पशुपालन कैसे किसानों की जीविका का आधार बनी रहे इन्हीं सारे सवालों का जवाब ढूंढने के लिए रामलाल आनंद महाविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के विद्यार्थी विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार के नेतृत्व में 26 फरवरी 2018 को सोनीपत के चिड़ाना गांव स्थित आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन पहुंचे।

डाबर परिवार ने पशुधन और किसानों की समस्याओं के निदान के लिए 1992 में आयुर्वेट की स्थापना की। आयुर्वेट न सिर्फ पशुपालन के लिए किसानों और युवाओं को प्रेरित कर रहा बल्कि उन्हें प्रशिक्षण देकर पशुपालन को मुनाफे का सौदा भी बना रहा है। यहां से युवक-युवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर डेयरी खोली और वे आज अच्छा पैसा कमा रहे हैं। ऐसे में आयुर्वेट किसानों के लिए एक उम्मीद के रूप में उभरा है जो लगातार उनकी आमदनी बढ़ाने तथा पशुओं के स्वास्थ्य और सेहत पर काम करने के लिए प्रयासरत है।

विद्यार्थियों को सबसे खास बिना जमीन के चारा उगाने की तकनीक लगी। ऐसे में पशुओं के लिए चारा कहां से आए, इस पर आयुर्वेट के शोधकर्ताओं ने विराम लगा दिया। आयुर्वेट हाइड्रोपोनिक्स मशीन के बारे में विद्यार्थियों को बताया गया कि इस तकनीक से महज सात दिनों में बहुत ही

कम पानी में बिना मिट्टी के हरा चारा उगाया जा सकता है। इस तकनीक से धान की नर्सरी भी तैयार की जाती है, जो घास-पात रहित रोग मुक्त होती है। वास्तव में यह तकनीक कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है। इस तकनीक में एक वाहननुमा मशीनी ढांचे में पांच परतों में ट्रे में चारा उगाया जाता है। इसका तापमान मशीन से नियंत्रित होता रहता है। चारे की लागत मूल्य महज पांच रुपए प्रति किलोग्राम पड़ती है।

इसके अलावा विद्यार्थियों को आर्गेनिक खाद बनाने की विधि के बारे में बताया गया। आयुर्वेट टीम के सदस्यों ने बताया कि रासायनिक खादों के दुष्प्रभावों के मद्देनजर आज आर्गेनिक खाद की मांग बहुत बढ़ गई है। अगर मानव संसार को बचाए रखना है तो आर्गेनिक खाद अपनानी होगी। साथ ही किसान इसे अपना कर मोटा पैसा भी कमा सकते हैं, क्योंकि जिस तरह से शहरों में आर्गेनिक सब्जियों और फलों की मांग बढ़ती जा रही है उससे किसानों की आय में बढ़ोतरी के साथ-साथ लोगों को स्वस्थ आहार भी मिलेगा। आर्गेनिक खाद गोबर-गोमूत्र-पशुओं के खाने के बाद छोड़ा गया चारा आदि अपशिष्ट से बनती है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि किसान की आमदनी पशुपालन के जरिए अच्छी-खासी बढ़ सकती है।

इस दौरान विद्यार्थियों ने आयुर्वेट की लैब का जायजा भी लिया, जहां शोध कार्य चल रहे होते हैं। उच्च तकनीक से लैस इस लैब में किसानों के खेतों से ली गई मिट्टी की जांच कर उसकी गुणवत्ता मापी जाती है। इसके साथ-साथ पशुओं के लिए हर्बल प्रोडक्ट जैसी दवाई आदि चीजें बनती हैं। इन सबके अलावा विद्यार्थियों को आयुर्वेट टीम ने केंचुआ पालन, वर्मी कम्पोस्ट बनाने, पशु गर्भाधान, औषधीय खेती, बायो गैस से बिजली बनाने की तकनीक आदि क्षेत्रों से जुड़ी जानकारियां दी गई।

इस अवसर पर आयुर्वेट के प्रबन्ध निदेशक डॉ. मोहन जे सक्सेना ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सन् 60 के दशक तक कभी भी रासायनिक खादों का उपयोग नहीं था। सिर्फ घर पर तैयार की गई आर्गेनिक खाद ही डाली जाती थी, लेकिन उसके बाद रासायनिक खाद के उपयोग से मिट्टी ने अपनी नमी खो दी। इसीलिए आयुर्वेट के तहत किसानों को हरियाणा सहित कई राज्यों में रिसर्च, जागरूकता अभियान चलाकर आयुर्वेदिक दवाओं की खेती की ट्रेनिंग दी जा रही है। डॉ. मोहन जे सक्सेना ने एक विद्यार्थी के सवाल का जवाब देते हुए बताया कि हर वर्ष अकेले 16 लाख मौतें धुएं से होती है, जिनमें गांव की महिलाओं की तादाद ज्यादा है। ऐसे में अभी तक आपने गोबर से खाद फिर बायो गैस बनते देखा होगा, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से गोबर से बायो सीएनजी भी बनाई जाने लगी है। ये वैसे ही काम करती है जैसे हमारे घरों में काम आने वाली एलपीजी। ये काफी सस्ती पड़ती है। इससे पर्यावरण को नुकसान भी नहीं होता है। इसे अपना कर कई महिलाओं ने अपना आर्थिक विकास सुनिश्चित किया है।

उन्होंने कहा कि भारत के किसानों में एक-दूसरे के बीच सामंजस्य नहीं है, जिससे किसानों का कर्ज बढ़ता है जैसे-एक ट्रैक्टर 10 किसान मिलकर खरीदें और सभी उसे एक-एक दिन प्रयोग में लाएं तो शायद उन्हें कर्ज की आवश्यकता ही न पड़े। उनका कहना था कि भारत में 33 करोड़ पशुओं की जनसंख्या है। ऐसे में किसान पशुपालन से अच्छा पैसा कमा सकते हैं, लेकिन पशुपालन का मतलब सिर्फ गाय भैंस नहीं है। अगर आपके पास जगह है तो मछली पालिए। पोल्ट्री का बिजनेस कीजिए। पशुपालन कीजिए। जब दूध हो तो उसे सीधे ना बेचें बल्कि उसे प्रोडक्ट बनाएं, जैसे खोया, पनीर आदि। इससे आपकी अच्छी कमाई होगी। गोबर है तो बायोगैस और बिजली बनाने की कोशिश कीजिए। अंत में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार ने विद्यार्थियों को समय देने और पशुपालन व कृषि से जुड़ी अनेक नवीन जानकारी देने के लिए आभार जताया और भविष्य में इस तरह के आयोजन करने के संकल्प को दोहराया। इस अवसर पर आयुर्वेट के सीईओ डॉ. अनूप, मीडिया सलाहकार डॉ. कुलदीप शर्मा, डॉ. अटल तिवारी एवं आयुर्वेट की पूरी टीम उपस्थित रही।

मुस्लिम महिलाओं को अब मिली आजादी

आशुतोष मिश्रा

''तुम्हारे खराब व्यवहार और शरिया के खिलाफ कामों से परेशान होकर मैं तुमसे अलग हो जाना बेहतर समझता हूं। इसलिए मैं अपने पूरे होशो-हवास में शरिया के मुताबिक तीन बार, मैं तलाक देता हूं, मैं तलाक देता हूं, मैं तलाक देता हूं, बोलकर तुम्हे शादी के बंधन से आजाद करता हूं।'' शायरा बानो को जिस दिन अपने शौहर का ये पत्र मिला उस दिन जैसे सब कुछ खत्म हो गया। उस समय वो बीमारी के इलाज के लिए उत्तराखंड अपने मायके आयी हुई थी। दो बच्चों की मां शायरा को रोज अपने शौहर से मार खानी पड़ती। उन्हें हर दिन प्रताड़ना की आग में जलना पड़ता। शौहर पेशे से प्रापर्टी डीलर था, पर अफसोस वो एक नामर्द की भूमिका अदा कर रहा था। वो कई बार गर्भवती हुई और कई बार उसे जबरन गर्भपात कराना पड़ा था। समाजशास्त्र में उनकी उच्च शिक्षा धूल चाट रही थी। जब सब कुछ असहनीय हो गया। सुलझ के सारे रास्ते बंद हो जाने से तंग आकर शायरा ने खुद को जुल्म के खिलाफ खड़ा किया। उन्होंने फरवरी 2016 में सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की। वो पहली मुस्लिम महिला थीं, जिन्होंने सदियों से चली इस तीन तलाक की प्रथा को वैधता की चुनौती दी।

वैसे तो अगस्त देश की आजादी के लिए जाना जाता है। हम हर वर्ष इसके स्वागत के लिए तैयार रहते हैं और ये हमारे जेहन में है और रहेगा, लेकिन इस अगस्त को भी लंबे समय तक याद किया जाएगा, क्योंकि जो ऐतिहासिक फैसला आया है उसने आज फिर से आजादी की बात की है। गत 22 अगस्त को जहां सर्वोच्च न्यायालय में प्रधान न्यायाधीश के समक्ष गहरी शांति छाई हुई थी वहीं पूरा देश उस फैसले की घड़ी का इंतजार कर रहा था। पांच जजों की बेंच सुनवाई के लिए बैठी और दोपहर होते-होते तीन-दो के अंतर से लम्बे समय से चली आ रही कुप्रथा को असंवैधानिक करार

दे दिया। पूरे देश मे खुशी की लहर दौड़ गई। ऐसा लग रहा था कि मुस्लिम समाज की औरतें सही मायने में आज आजाद हुई हैं।

उस दिन सही मायने में जीत शायरा बानो की थी। इस फैसले से जहां एक ओर औरतें खुशी से झूम रही थी तो दूसरी ओर राजनीतिक दलों में इसकी होड़ लेनी शुरू हो गई थी, लेकिन मेरा मानना है इस ऐतिहासिक फैसले का श्रेय न्यायपालिका और शायरा जैसी तमाम उन महिलाओं को मिलना चाहिए जिन्होंने इसके विरोध में आवाज उठाई। इसमें किसी दल का कोई किरदार नहीं था। जब ये फैसला आया तब मैं आज तक के स्टूडियो में बैठा था वहीं एक मुस्लिम महिला थीं और एक सवाल पर उन्होंने कहा कि 'अदालतें और संसद मजहबी मामलों में दखलंदाजी न करें यह इस्लाम के खिलाफ है। शरीयत में कोई दखलंदाजी बर्दाश्त नहीं होगी।' यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया कि क्यों उन्होंने ऐसा बोला? दरअसल तभी पता चला कि उन्होंने कुरान पढ़ी ही नहीं। बस जो धर्मगुरुओ ने बोला वो मान लिया क्योंकि वो अशिक्षित थीं। शिक्षित न होना भी इस कानून को मानना बड़ा कारण था। दरअसल जिन्हें धर्मगुरु मजहबी बता रहे हैं असल में वह मुस्लिम महिलाओं के लिए बेड़ियां थीं।

दुनिया के 22 देशों में तीन तलाक पर बैन लगा हुआ है, जिसमें इस्लामिक देश भी शामिल हैं। पड़ोसी देश पाकिस्तान में काफी पहले ही तीन तलाक को बैन कर दिया गया था। अब हिंदुस्तान में अदालत ने तीन तलाक पर रोक लगा दी है। ऐसे में अब सरकार की जिम्मेदारी है कि वह मुस्लिम समाज की महिलाओं के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए एक प्रभावशाली कानून बनाये।

पुरुषवादी समाज और स्त्री

श्रेया उत्तम

एक स्त्री के अंदर का प्रतिरोध भला शब्दों में कैसे उड़ेला जा सकता है। जब-जब तुम हमारी आंखों के सामने से अपनी हवस भरी मुस्कान के साथ निकलते हो, कभी मेलों, बाजारों, उत्सवों में अपनी नजरों से हमारे कपड़ों को चीर-फाड़ कर जब तुम हमारे जिस्म से अलग कर रहे होते हो तो कसम से हमें फूटी आंखों नहीं सुहाते हो। तुम्हारी इन हरकतों पर जितना हमारा खून खौलता है न उतनी ही सांसें झटपटाने लगती हैं तुम्हारी गंदी नजरों के पिंजरे से आजाद होने के लिये।

जब कभी तुम्हारा मन करता है छतों से कूदकर तुम अपनी पौरुषता का विजय रथ लेकर घुस जाते हो घरों में और किसी लड़की के जिस्म से जोकि तुम्हारे लिये खिलौना है उससे खेल कर जब शान से भरे समाज में चलते हो न तब तुम्हारी इस कायरता पर तरस आता है। खेतों, बसों, स्कूलों, कॉलेजों, ऑफिसों, सुनसान गलियों में तुम खुले हुये सांड की तरह घूमते हो और रौंदते रहते हो छातियों को। गंदी व भद्दी गालियों, अश्लील टिप्पणियों से कभी एसिड अटैक, यौन शोषण, बलात्कार करके तुम खुद की फूहड़ता और जाहिलता पर आखिर कैसे इतरा लेते हो?

तुम सिर्फ अजनबी या पड़ोसी ही नहीं होते हो। तुम वहशी दरिंदे प्रेमी के भेष में भी होते हो, जो पहले मोहब्बत के नाम पर उसके जिस्म को बिस्तर-चादर बनाकर लेटते-ओढ़ते रहते हो और जब मन भर जाता है तो उसकी फोटो, वीडियो बनाकर दुनिया के सामने रखकर असली मोहब्बत का प्रमाण दे देते हो।

तुम पति भी होते हो, जिसको समाज हक देता है कि जब चाहो, जैसे चाहो तुम्हें उससे सेक्स करने का अधिकार है। अगर उसकी तरफ से मर्जी न होने पर विरोध होता है तो तुम वह सह नहीं पाते हो। कभी जबरदस्ती तो कभी लातों-घूंसों, चप्पलों से या आग के हवाले से घरेलू हिंसा करके तुम अपनी मर्दानगी दिखा देते हो। तुम बाप, चाचा और भाई भी होते हो जिनको हवस के आगे कुछ दिखाई नहीं देता। उसकी चीखें तुम्हें शहनाइयों की गूंजों से कम नहीं लगती हैं और जब कभी तुम अपने कारनामों में सफल नहीं होते हो तो एसिड अटैक, ब्लैकमेल, अश्लील सामग्री के दुरुपयोग और हत्यायें कर डालते हो।

इन सब के बीच कुछ दिनों पहले अमेजन के ऐश-ट्रे प्रॉडक्ट जिसमें एक नग्न महिला को टब के ऊपर लेटा हुआ दिखाया गया है, जिसकी वजाइना में आप सिगरेट बुझा सकते हैं, इस पर प्रीति कुसुम ने सही लिखा है कि 'ये क्रिएटिविटी है, अमेजन की साइट पर बिक रहा ये ऐश-ट्रे, इस देश की बलात्कारी मानसिकता का जीता जागता उदाहरण है।' सेक्स करने के बाद तुम वजाइना में घोंप देते हो कंकड़, पत्थर, शराब की टूटी बोतलों के टुकड़े, लोहे के रॉड और जब इससे भी मन नहीं भरता तो सिगरेट से जलाते हो उसके अंगों को और खून से लथपथ अधमरा करके फेंक देते हो मरने के लिये सड़कों, होटलों, तालाबों के किनारे। अगर हम जिंदा बच भी जाते हैं तो ये सारे दुष्कर्म किसी गीले कपड़े की तरह सिर्फ हमारे जिस्मों को ही नहीं निचोड़ते हैं बल्कि हमारी रूह पूरी जिंदगी इस मानसिक कश्मकश और समाज के तानों की चुभन से बेचैन होकर हमेशा झटपटा कर रह जाती है।

कैसे हो रही महिलाओं की सुरक्षा

अनुज यादव

केंद्र मे भाजपा की सरकार को लगभग चार वर्ष होने को हैं। अब उत्तर प्रदेश में भी भाजपा की सरकार है, लेकिन आज भी महिला सुरक्षा को लेकर सरकार की व्यवस्था लचर है। आज भी महिलाएं खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं। महिलाओं के साथ छेड़छाड़ और बलात्कार के मामले आए दिन देखने और सुनने को मिलते हैं। यह सिलसिला बदस्तूर जारी है। इस तथ्य के उलट मोदीजी और योगी जी कहते हैं कि देश का विकास हो रहा है। महिलाओं को सम्मान मिल रहा है।

उत्तर प्रदेश में महिला सुरक्षा के लिए योगीजी ने नीति बनाई। पुलिस का एंटी रोमियो दल बनाया, पर इससे महिला सुरक्षा होने के बजाय महिलाएं और छात्राओं की परेशानी और बढ़ गई। कालेजों और स्कूलों के आसपास किसी लड़की के साथ कोई लड़का जा रहा हो तो पुलिस उस पर कार्रवाई करने लगी। महिला सुरक्षा को लेकर राज्य की बनाई यह नीति सफल कम असफल ज्यादा नजर आ रही है। अनेक मामलों में ऐसा देखने को मिला कि साथ जा रहे भाई-बहन, परिवार अथवा रिश्तेदारों को भी पुलिस ने परेशान किया। कुछ जगह तो भाई और बहन को ही शक की नजर से देखा गया। कई शहरों और नगरों में डर का आलम यह हो गया कि लोग लड़कियों को साथ लेकर चलने में संकोच करने लगे।

प्रदेश में महिला सुरक्षा कितनी चुस्त और दुरुस्त है इसकी बानगी पिछले दिनों बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में देखने को मिली। बीएचयू में शाम छह बजे के बाद लड़कियां किसी काम से बाहर निकलतीं तभी कुछ लड़के गाड़ी से आते और उनके साथ छेड़छाड़ करते। लड़कियों के विरोध के बावजूद गार्ड उनकी मदद नहीं करते। वह जब इस घटना के बारे में बीएचयू प्रशासन को बतातीं तो प्रशासन का जवाब होता कि आप देर शाम को बाहर क्यों निकलीं। प्रशासन की तरफ से कोई कार्रवाई नहीं की गई तो छात्राएं प्रदर्शन करने को मजबूर हो गईं तभी पुलिस ने छात्राओं पर लाठी चार्ज कर दिया। यह किस तरह की महिला सुरक्षा है? कहां महिलाओं और छात्राओं को सम्मान मिल रहा है? योगी सरकार में महिला सुरक्षा पूरी तरह ध्वस्त है। अगर पुलिस ही छात्राओं पर लाठी चार्ज करती है तो महिलाएं कैसे अपने आपको सुरक्षित महसूस कर पाएंगी? अगर सरकार छेड़छाड़ करने वाले आरोपी पर कड़ी कार्रवाई नहीं कर सकती तो वह कैसे दावा कर सकती कि महिलाओं को सम्मान मिल रहा है?

गणेश शंकर विद्यार्थी की पत्रकारिता

पारसमणि

अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता जगत का वह नाम जो साम्प्रदायिकता की भेंट चढ़ गया। विद्यार्थीजी एक ऐसे महान पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी कलम के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोलन में जनजागरूकता फैलाने का काम किया। विद्यार्थीजी का जन्म 26 अक्टूबर 1890 को अपने ननिहाल इलाहाबाद में हुआ था। वह न केवल निडर और निष्पक्ष पत्रकार थे अपितु वह एक समाजसेवी, स्वतंत्रता सेनानी तथा अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी के कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। इस महान पत्रकार ने अपनी कलम से अंग्रेजी शासन की नींव को हिलाकर रख दिया तो देशी सामंतों और रजवाड़ों के कारनामों का खुलासा किया। इन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसक समर्थकों तथा क्रांतिकारियों को देश की आजादी में समान रूप से अपना सहयोग दिया था। कुछ लोग कहते हैं कि विद्यार्थीजी महात्मा गांधी द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ शुरू किए गए अहिंसकवादी आंदोलन से सहमत नहीं थे, क्योंकि वह स्वभाव से उग्रवादी विचारों के पक्षधर थे।

गणेश शंकर विद्यार्थी गहनता से अध्ययन करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी अभिरुचि को प्रकट कर दिया था। मात्र सोलह वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने 'हमारी आत्मोसर्गता' नामक किताब लिख डाली थी। इस किताब में नवयुवकों में देश के प्रति अपनी भूमिका को जगाने का कार्य बखूबी किया गया था। विद्यार्थीजी, महावीर प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व और विचारों से सहमत होकर ही पत्रकारिता के क्षेत्र में आए थे। 'सरस्वती' में बतौर उपसंपादक के रूप में कार्य करने के पश्चात अंतत: उन्होंने 'प्रताप' नामक अखबार का प्रकाशन शुरू कर दिया। उस क्रांतिकारी दौर में इस युवा पत्रकार ने जनजागरूकता का महती काम किया, जिसके चलते इन्हें पांच बार जेल भी जाना पड़ा। इस दौरान इन्हें महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा मदन मोहन मालवीय जैसे वरिष्ठजनों का मार्गदर्शन मिला था।

'प्रताप' के प्रवेशांक में विद्यार्थीजी लिखते हैं-'किसी की प्रशंसा या अप्रशंसा, प्रसन्नता व अप्रसन्नता, डर व धमकी से हम रुकने वाले नहीं हैं। 'प्रताप' साम्प्रदायिकता, जाति और धर्म की सूचनाओं से बिलकुल परे होगा।' पत्रकारिता करते हुए यह महान पत्रकार कानपुर में 1931 के हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे में असहायों को बचाते-बचाते शहीद हो गए थे। इस महान क्रान्तिकारी समाज सुधारक व स्वतंत्रता सेनानी पत्रकार को यदि पत्रकारिता का महान पुरोधा कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

हाशिए पर जाती जमीनी पत्रकारिता

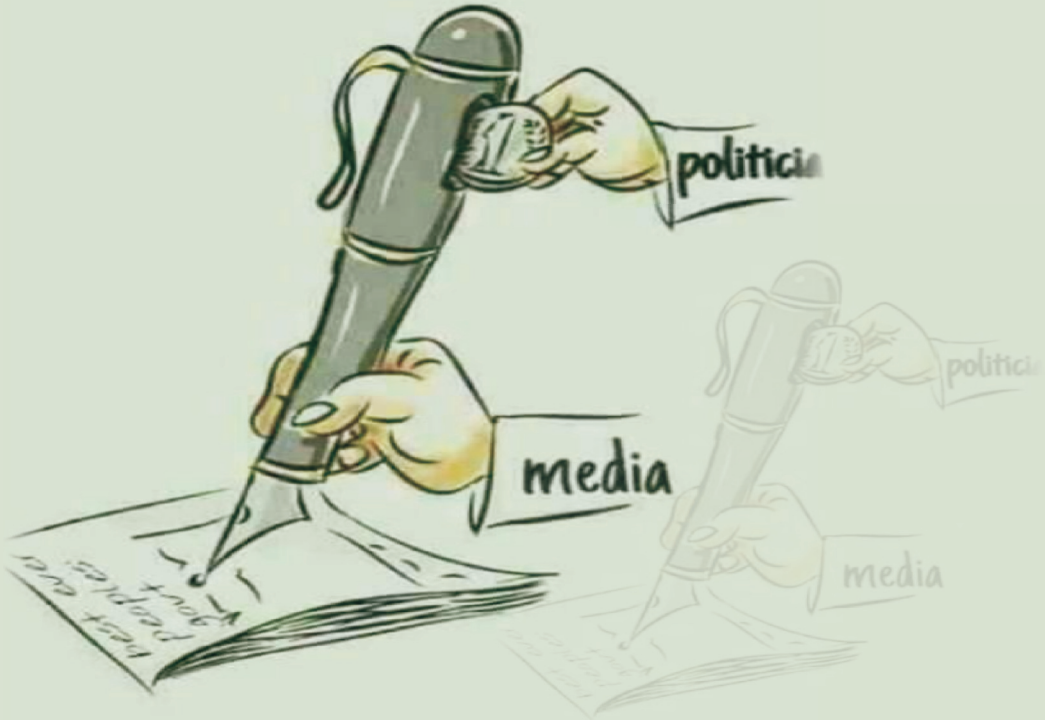

अर्शियान आरिफ खान

लोकतंत्र का सबसे सशक्त माध्यम कही जाने वाली पत्रकारिता आज अपनी अस्मिता खोती नजर आ रही है। आज पत्रकारिता खास तौर पर टीवी पत्रकारिता एक तरह से स्टूडियो की चारदीवारियों तक ही सीमित रह गयी है। कोई भी पत्रकार जमीन पर उतरकर पत्रकारिता करना नहीं चाहता है। ग्राउंड रिपोर्टिंग का अस्तित्व लगभग खत्म होता जा रहा है।

आज टीवी पत्रकारिता ने एक तरह से हमारी सोचने की क्षमता को सीमित सा कर रखा है। वे हमें वही सामग्री दिखाना चाहते हैं जो वे चाहते हैं। पत्रकारों का कर्तव्य बनता है कि वह हमें सत्य और निष्पक्ष सूचना से रुबरू कराएं न कि तोड़-मरोड़कर चीजें पेश करें, लेकिन वर्तमान में यह नियम लगभग प्रतिबंधित है। पत्रकारों की स्थिति ऐसी हो गयी है कि यदि आप निष्पक्ष, ईमानदार और सच बोलने के पक्षधर हैं तो मीडिया हाउस में आपके लिए कोई स्थान नहीं है।

वर्तमान समय में हालात इतने बुरे हैं कि पत्रकारिता संस्थान जिन्हें हम पत्रकारिता की कोख का दर्जा देते हैं वहीं से हमें यह सिखाया जाने लगा है कि खबर को बनाकर लिखो। खबर कम मनोरंजन ज्यादा मतलब इंफोटेनमेंट। यदि कोख से ही हमारी परवरिश ऐसी होगी तो आने वाले भविष्य में पत्रकारिता के हालात कैसे होंगे इसका अंदाजा लगाना कठिन नहीं है।

स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता के सन्दर्भ व्यापक होने चाहिए थे किन्तु हो एकदम उल्टा रहा है। हम पिछली सदी के नवें दशक के अंत में हिंदी पत्रकारिता पर नजर डालें तो उस समय अधिकांश हिंदी पत्रकारिता जाति विद्वेष से भरी सांप्रदायिक पत्रकारिता कर रही थी। उस पर ऐसे आरोप लगाना निराधार नहीं है। अखबारों से सच्ची सूचना प्राप्त करना जनता का लोकतान्त्रिक अधिकार है। अखबार स्वयं लोकतंत्र का वकील है किन्तु जब अखबार स्वयं धर्म-जाति तक सीमित हो जाता है तो उसके चरित्र पर संदेह होने लगता है। उदाहरण के तौर पर रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद के मामले में आप उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ अखबारों की भूमिका देख सकते हैं या फिर 2014 के लोकसभा चुनाव में मीडिया की भूमिका देख सकते हैं।

पत्रकारिता में आई इन बुराइयों की सबसे बड़ी वजह उद्योगपतियों और राजनैतिक पार्टियों का मीडिया घरानों में निवेश है।

हिंदी को लेकर नजरिया बदलिए

अवधेश पैन्यूली

आज के समय में हिंदी को विपरीत एवं नकारात्मक पर्याय के रूप में लिया जाता है। हिंदी मतलब अज्ञान, सामान्य, स्थिर आदि। यह तो जगजाहिर है कि हिंदी की आत्मा को हर दिन मारा जा रहा है। जलील किया जा रहा है। जो लोग हिंदी पढ़ते-लिखते अथवा बोलते हैं, उनके लिए यह आत्मग्लानि का सबब बन गया है। कहते हैं वक्त के साथ बदलना जरूरी है, लेकिन भाषा, आचरण, व्यवहार इस कदर बदलेंगे समझना मुश्किल है। अंग्रेजी की कतार में हिंदी कहीं अंतिम में शिथिल और घबराई हुई होती है। अंग्रेजी ने हिंदी की तुलना में ऐसा जाल बिछाया है कि यह जरूरत बन गई है और हिंदी खौफ।

हिंदी के इतर दूसरी भाषा का आना समस्या नहीं है बल्कि दूसरी भाषा के आ जाने से हिंदी का उसके सामने घुटने टेक देना समस्या है। बसों और मेट्रो में हिंदी की किताब पर अंग्रेजी का कवर लगाकर पढ़ना इसका जीता जागता उदाहरण है। कोई हिंदी भाषी व्यक्ति किसी सार्वजनिक जगह पर हिंदी की किताब को पढ़ने से कतराता है कि बगल में बैठा व्यक्ति क्या सोचता होगा। यह भी दृष्टव्य है कि बस में अंग्रेजी की किताब पढ़ रहे हों तो लोग सहज होते हैं वहीं हिंदी की किताब पढ़ो तो तुच्छ नजरों से देखने लग जाते हैं। इस बात से जाहिर है कि आपकी इज्जत और मान-सम्मान सिर्फ अंग्रेजी तक सीमित है, जो दुखद और विचारणीय बिंदु है। हिंदी पर आप नगण्य माने जाएंगे। यह समाज की दृष्टि बन गई है। इसका एक कारण अंग्रेजी का शासकीय भाषा होना भी माना जा सकता है, जिसे हिंदी बाहुल्य समाज आसानी से समझ नहीं पाता। भारत में ही आप किसी दूसरे भाषी क्षेत्र में जाएंगे तो यह सोच करके जाते हैं कि अगर उन्हें हिंदी नहीं भी समझ आती तो अंग्रेजी तो आ ही जाती होगी। यह जो आ ही जाती होगी वाला दृष्टिकोण है यही हिंदी का आत्म समर्पण है। भारत में अंग्रेजी एक भाषा नहीं बल्कि स्टेटस बन चुकी है, जिसे अंग्रेजी आती है मतलब उसका स्टेटस ऊपर है। अंग्रेजी ने सोचने का नया आयाम तो दिया है, लेकिन यह भी सच है कि उसने दिखावे और हीनता की भावना को भी जन्म दिया है।

हिंदी को बढ़ावा देना होगा

महेंद्र

देश को अगर एक सूत्र में पिरोना है तो हिंदी एक ऐसा माध्यम है जिसे बढ़ावा देकर यह काम किया जा सकता है। हिंदी को जो स्थान प्राप्त है वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता। हिंदी में ही हमारे भारत की आत्मा निवास करती है। हिंदी के माध्यम से राष्ट्र बोलता है, रोता है और हंसता है। हिंदी भारत का अस्तित्व है। यह भारत के गौरव की पहचान है। सोने की चिड़िया कहे गए भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक विरासत को हिंदी ने सहेज कर रखा है।

हिंदी विश्व के सभी भाषाओ में महानतम है। यह भाषा भारत की प्रगति के रथ के समान है। जिस प्रकार विश्व के अनेक देश अपनी भाषा के माध्यम से प्रगति पथ पर अग्रसर हुए। चाहे वह चीन, जापान, क्यूबा आदि देशों ने अपनी राष्ट्र भाषा को राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय चरित्र के बल पर विश्व के सामने अनुकरणीय मिसाल पेश की, क्या हम भारतवासी ऐसा नही कर सकते हैं।

चेकोस्लाविया के विद्वान प्रो. ओधोलेन स्मेकलन ने नागपुर में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में कहा था-'देश की आत्मा को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना चाहिए।' हिंदुस्तान के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि जिस देश को अपनी राष्ट्र भाषा और अपने साहित्य पर गौरव का अनुभव नहीं वह उन्नत नही हो सकता। राष्ट्र भाषा का राष्ट्रीय एकता के साथ गहरा संबंध है। आज हिंदी पर अत्याचार हो रहा है। हमारे ही देश के नागरिक हिंदी बोलने में शर्म महसूस करते है। कुछ अंग्रेजी परस्त लोगों का मानना है कि हिंदी वैज्ञानिक भाषा नहीं है, इसलिए वे हिंदी की आलोचना करते है।

देश में अधिकतर शिक्षण संस्थाएं अंग्रेजी में ही पाठ्यक्रम चला रही हैं। हमें प्रयास करना चाहिए कि उक्त पाठ्यक्रम अंग्रेजी के साथ हिंदी में भी हो। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की बात कही है, लेकिन ऐसा होता दिखता नहीं है। ऐसे में हम सबको मिलकर हिंदी को राज्य भाषा से राष्ट्र भाषा बनाने के लिए प्रयास करना होगा। यह तभी मुमकिन होगा जब हम हिंदी लिखेंगे। हिंदी बोलेंगे। इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी की बात याद आती है जब उन्होंने कहा था की 'कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतन्त्र नहीं हो सकता। जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।'

सरदार सरोवर बांध विवाद और सत्याग्रह

विशाल जोशी

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर मोदी के जन्मदिन पर सरदार सरोवर बांध के 30 दरवाजे खोले गए। दूसरी ओर बांध के डूब क्षेत्र में आने वाले गांव के लोग इस परियोजना और सरकार के खिलाफ थे। वे जल सत्याग्रह जैसे आंदोलन से विरोध प्रकट कर रहे थे। क्या लोग विकास नहीं चाहते थे? यह बांध 2006 में तैयार हो चुका था, पर बांध को अब तक क्यों नहीं खोला गया?

इस काम की पहल पचास के दशक में हुई थी जब सेंट्रल वाटरवेज, सिंचाई विभाग ने एक कमेटी बनाई। कमेटी का गठन इसलिए किया गया था ताकि जाना जा सके कि ये परियोजना कितनी लाभदायक, कारगर और जनकल्याणकारी होगी। 15 साल बाद 1961 में पंडित नेहरू ने इस परियोजना की नींव रखी। नर्मदा नदी पर परियोजना के तहत 30 बांध बनने थे, जिनका उद्देश्य गुजरात के सूखाग्रस्त इलाकों में सिंचाई के लिए पानी पहुंचाना था। मध्य प्रदेश को बिजली देना था। राजस्थान को पानी देना तथा नगरीय इलाकों में पीने का पानी पहुंचाना था। इन सभी बांधों में से सबसे बड़ी परियोजना सरदार सरोवर परियोजना थी, जिसकी ऊंचाई 138.68 मीटर एवं लंबाई 1210 मीटर है तथा इसमें 86.2 लाख क्यूबिक मीटर कंक्रीट प्रयोग किया गया। आगे चलकर नर्मदा नदी के पानी के लिए गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में विवाद हो गया, जिसको सुलझाने के लिए 1969 में नर्मदा डिस्प्यूट्स ट्रिब्यूनल का गठन किया गया। उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश वी. रामास्वामी इसके अध्यक्ष थे।

जल विवाद के अलावा इस ट्रिब्यूनल का मुख्य उद्देश्य बांध के कारण विस्थापित लोगों का पुनर्वास भी था। गुजरात सरकार को हिदायत दी गई कि जिन लोगों की जमीन डूब क्षेत्र में आ रही है उन सभी को कहीं और जमीन दी जाए, मगर अधिकतर लोग पुश्तैनी जमीनों पर रहते थे। उनके पास जमीन के कागजात नहीं थे तो उन सभी को जमीन नहीं मिली। आज भी वे लोग उसी डूब क्षेत्र में बसे हुए हैं।

ट्रिब्यूनल में कोई समाज विज्ञानी नहीं था न कोई मानव विज्ञानी था और न ही कोई पर्यावरण विज्ञानी था। ऐसे में इस प्रोजेक्ट को 1978 में क्लीनचिट मिल गई। क्लीनचिट मिलने के बाद विश्व बैंक ने प्रोजेक्ट पर आने वाले खर्च का 10 फीसद धन मंजूर कर दिया। विश्व बैंक किसी भी परियोजना में पैसा लगाने से पहले जांच करता है कि उक्त परियोजना से किसी प्रकार की मानव क्षति, पर्यावरण हनन या भविष्य में किसी प्रकार का जनविरोध न हो। तब ही वह निवेश करता है, लेकिन इस मामले में उसने ट्रिब्यूनल की रिपोर्ट पर भरोसा कर पैसे देना मंजूर कर लिया। 1980 के बाद बांध के विरोध में उठ रही आवाजों ने विकराल रूप ले लिया। 1989 में आंदोलन को नाम मिला 'नर्मदा बचाओ आंदोलन', जिसकी अगुआई बाबा आप्टे और मेधा पाटेकर ने की। इस विवाद के चलते विश्व बैंक को अपने फैसले के बारे में फिर से सोचना पड़ा और 1991 में एक स्वतंत्र कमीशन भारत भेजा। इस कमीशन ने 357 पृष्ठों की एक रिपोर्ट तैयार की, जिससे साफ होता है कि उक्त परियोजना से मानवाधिकारों का हनन हो रहा है। इस रिपोर्ट के बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व बैंक की कड़ी आलोचना हुई, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसने 1993 में परियोजना से हाथ खींच लिए। इसके बावजूद गुजरात सरकार ने काम जारी रखा।

गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने दिसंबर 2006 में इस बांध का उद्घाटन किया तथा इसे 17 मीटर और ऊंचा करने का आदेश दिया, जिससे इसकी ऊंचाई 125.92 मीटर से 138.68 मीटर हो गई। इससे पता चलता है कि यह परियोजना जनकल्याणकारी न होकर जनविनाशकारी थी। ऐसे में सवाल उठता है कि तो फिर क्यों ये बांध बनाया गया? बांध के लाभ गिनाते वक्त कहा गया था कि इस बांध के जरिए गुजरात के सूखाग्रस्त इलाकों तक सिंचाई के लिए पानी पहुंचाया जाएगा। मगर गुजरात के मुख्यमंत्री का कहना है कि अभी तक नहरों का निर्माण हुआ ही नहीं है। इस बांध का लाभ पेय-पदार्थ बनाने वाले उद्योगपति उठा रहे हैं। अंतत: बात यह उठती है कि तीन लाख से ज्यादा लोगों को बेघर कर दिया गया और 37000 हेक्टेयर उपजाऊ जमीन पानी तले चली गई। क्या 47000 करोड़ रुपये खर्च करके इस बांध को बनाने की आवश्यकता थी जबकि इतनी ही लागत और आनी है?अंत में सरकार के लिए एक प्रश्न एक तरफ लोग जल सत्याग्रह में अपनी मौत के दरवाजे पर खड़े थे वहीं दूसरी ओर हमारे जनप्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने जन्मदिन का उत्सव मना रहे थे क्या ये एक देश के सर्वोच्च व्यक्ति को शोभा देता है?

देश की तरक्की में बाढ़ एक गंभीर समस्या

ऋतुज दत्त राय

भारत भौगोलिक दृष्टिकोण से विभिन्नता से भरा है, जिसमें बाढ़ एक गंभीर भौगोलिक आपदा के रूप में आती है। हर साल इसके भयावह परिणाम देखने को मिल रहे हैं। कई राज्यों गुजरात, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, उड़ीसा, असम, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश आदि में यह अपना कहर बरपा रही है। एक अनुमान के मुताबिक वर्ष 2017 में करीब 300 मौतें केवल भारी बारिश के कारण हुई हैं। इसके साथ-साथ बुनियादी ढांचा, पर्यावरण, पशु जीवन पर भी इसका काफी बुरा असर पड़ा है। यही नहीं इसने देश के जीडीपी को भी नुकसान पहुंचाया है। बाढ़ आने के कई कारण हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में इसके अलग-अलग कारण हैं। जब कम समय में ही किसी स्थान पर भारी बारिश होती है तब यह बाढ़ का रूप धारण कर लेती है और जानमाल को काफी नुकसान पहुंचाती है। उदाहरण के तौर पर पिछले साल बिहार में हुई बारिश को देखा जा सकता है, जिसमें लगभग 520 लोगों की मौत हो गयी। इसके कारण बिहार की आर्थिक स्थिति पर भी काफी असर पड़ा। इसी तरह माउंट आबू में भारी बारिश नें बाढ़ का रूप धारण कर लिया और जान माल को काफी हद तक हानि हुई। संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए एक अध्ययन के मुताबिक समूचे विश्व में बाढ़ का मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन है।

उत्तर और उत्तर पूर्वी पहाड़ी इलाकों में बाढ़ का मुख्य कारण भूस्खलन है। इससे नदियों का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है, जो एक निश्चित सीमा के बाद विकराल बाढ़ का रूप धारण कर लेती है। जून 2013 में उत्तराखंड में लगभग 6000 लोगों की मौत हुई, जो भूस्खलन के बाद से बाढ़ का रूप धारण करने से हुई। बरसात के दिनों में नालियों का अवरुद्ध हो जाना विशेषकर शहरी और महानगरीय क्षेत्रों में बाढ़ का मुख्य कारण बनती है। दिसंबर 2013 में चेन्नई में लगभग 400 लोगों की मौतें ड्रेनेज सिस्टम की विफलता से हुई थीं। आज के युग में जनसंख्या विस्फोट के कारण प्रवास भी एक गंभीर

समस्या के रूप में सामने है। प्रवास के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनी है, जो कि बाढ़ को बुलावा देने का कार्य करती है।

इसका सबसे खतरनाक परिणाम वृहत स्तर पर जानमाल की हानि है। आंकड़ों के मुताबिक साल 2017 में बाढ़ के कारण बिहार में लगभग 514 मौतें तो उत्तर प्रदेश में 102 मौतें हुई। पिछले साल लगभग 900 लोग बाढ़ के कारण मारे गए। बाढ़ के कारण कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जिससे पूरा जनजीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। खेतों में पानी जमा हो जाने से फसल को नुकसान होता है। साथ ही यह मिट्टी के ऊपर की उपजाऊ परत को हटाकर उसे बंजर बना देती है। इससे जनजीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। किसान तो कर्ज में डूबता ही है वहीं मुद्रास्फीति में उतार-चढ़ाव के कारण अन्य वर्ग के लोग भी प्रभावित होते हैं।

बाढ़ देश की आर्थिक संरचनाओं-परिवहन, बिजली उत्पादन को प्रभावित करती है। दैनिक जरूरत की चीजों की पूर्ति में भी बाधा पहुंचाती है। बाढ़ ग्रस्त इलाकों को रोग अपनी चपेट में ले लेता है, क्योंकि वहां का पेयजल दूषित हो जाता है और स्वच्छ पेयजल का अभाव हो जाता है। पानी जमने से मलेरिया और टी.वी. जैसे संक्रामक रोग अपना डेरा जमा लेते हैं। बाढ़ से बचने का सबसे प्राथमिक उपाय बाढ़ ग्रसित क्षेत्रों को चिन्हित कर उसके आसपास रह रहे लोगों को कहीं सुरक्षित जगह विस्थापित करना है। बरसात से पूर्व नालियों और पानी निकासी के अन्य माध्यमों की समुचित सफाई किया जाना चाहिए। जल निकासी के उपायों जैसे बांधा और तटबंधों का निर्माण कराया जाना चाहिए।

बाढ़ संभावित क्षेत्रों में लोगों को बसने अथवा अन्य किसी भी प्रकार के बुनियादी ढांचे के निर्माण में परहेज किया जाना चाहिए। अधिक से अधिक लोगों को जागरुक किया जाये। नदियों, तालाबों, नहरों के किनारे समेत अन्य जगहों भी अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण का कार्य संपन्न कराना चाहिए, क्योंकि वृक्ष पानी के बहाव को नियंत्रित करता है और भूस्खलन भी रोकता है।

अंतिम बात यह कि बाढ़ एक चिंतनशील भौगोलिक आपदा है, जिससे प्रत्येक वर्ष हो रहे जानमाल की हानि को कम करने का हरसंभव प्रयत्न किया जाना चाहिए। एक आंकड़े के अनुसार भारत का 12 प्रतिशत हिस्सा बाढ़ संभावित क्षेत्र है। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार वर्ष 1970 और 80 के दशक में इसके कारण देश के जीडीपी में लगभग 0.9 फीसदी तक की कमी आई। हालांकि आज प्रतिशत 0.1 फीसदी से भी नीचे आ गया है। परंतु फिर भी एक विकासशील देश के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से यह नुकसान काफी ज्यादा है।

पर्यावरण पर आंदोलनों का प्रभाव

सृष्टि बहुगुणा

1995 के मध्य की अलग अलग घटनाओं ने पर्यावरण से संबंधित बहस छेड़ी, जो भारतीय समाज और राजनीति के केंद्र में भी पहुंची। उन्ही में एक घटना है टिहरी गढ़वाल जिला प्रशासन द्वारा घोषणा जिसके अनुसार मेधा पाटकर और नर्मदा बचाओ आंदोलन के अन्य सदस्यों के लिए जिले में प्रवेश पर रोक लगा दी गयी थी। कारण यह बताया गया कि उन्हें टिहरी बांध के समर्थकों और विरोधियों के बीच हिंसा का डर था। उस समय पर्यावरणवादी सुन्दरलाल बहुगुणा डैम पर हो रहे कार्यों को रोकने के लिए भूख हड़ताल पर थे, लेकिन वास्तव में सरकार इस बात से डरी हुई थी कि अगर नर्मदा बचाओ आंदोलन को आगे बढ़ने दिया गया तो डैम के विरुद्ध आंदोलन और तेज हो जायेगा।

इसी डर के साथ-साथ कई पर्यावरण संबंधी लेख छापे गए। खबरे छापी गई। मानव जाति रुपया, बाजार, टेलीविजन के सहारे नहीं बल्कि ताजी हवा, शुद्ध जल, खाद्य पदार्थ, उपजाने योग्य जमीन और जैविक स्रोतों के सहारे जीवित रह पाती है। बिना इनके मानव जाति मिनटों में नष्ट हो सकती है। मानव जाति एवं प्राणियों को संसार में बनाये रखने के लिए प्रकृति अधिक महत्वपूर्ण है।

भारतीय पर्यावरण को मुद्दों के आधार पर तीन भागो में बांट सकते हैं। पहला-जल से जुड़े आंदोलन जिनमें नर्मदा बचाओ आंदोलन, गंगा मुक्ति आंदोलन, पानी पंचायत आदि आंदोलन हैं, जिनका उद्देश्य जल को प्रदूषण से मुक्त करना एवं पेय जल के रूप में प्रदान करना है। दूसरा-जंगल से जुड़े आंदोलन जिनमें मुख्य हैं विशनोई आंदोलन, चिपको आंदोलन, अपिको आंदोलन आदि जिनका मुख्य उद्देश्य वनों को सुरक्षित एवं जैव विविधता की रक्षा करना रहा है वन संसाधनों में भागीदारी सुनिश्चित एवं प्रकृति की सुंदरता को बनाये रखना रहा है। तीसरा-जमीन से जुड़े आंदोलन जो मिट्टी की उर्वर शक्ति बढ़ाने, मिट्टी का कटाव रोकने तथा बड़ी परियोजनाओं के कारण विस्थापित लोगों के अधिकारों को बचाने के लिए संघर्षरत हैं, जैसे-नर्मदा बचाओ एवं बीच बचाओ आंदोलन।

जंगल से जुड़ा एक आंदोलन जो प्रकृति की सुरक्षा को दर्शाने के लिए मुख्य उदाहरण है। विशनोई आंदोलन जो पेड़ों के लिए हुआ था, जिसमें पेड़ों को कटने से बचाने के लिए देखते ही देखते 363 विश्नोइयों ने पेड़ों से चिपक कर अपना बलिदान दे दिया। यह पूरी घटना प्रकृति के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त करती है। इस घटना को सभी देशों में वृक्ष मानव संस्था के माध्यम से प्रचारित किया गया। आगे चलकर इस आंदोलन ने ही लोगों को चिपको आंदोलन के लिए प्रेरित किया।

चिपको आंदोलन मूलत: उत्तराखंड की सुरक्षा के लिए वहां के लोगों द्वारा 1970 के दशक में आरम्भ किया गया। इसमें

लोगों ने पेड़ों को गले लगा लिया ताकि उन्हें कोई काट न सके। यह आंदोलन प्रकृति और मानव के बीच प्रेम का प्रतीक बना। इसे चिपको आंदोलन कहा गया। चिपको आंदोलन जिस अलकनंदा वाली भूमि से उपजा वह 1970 में आई भयंकर बाढ़ का अनुभव कर चुका था। इस बाढ़ से 400 किलोमीटर दूर तक का इलाका ध्वस्त हो गया। बड़े-बड़े पुल, लकड़ी, ईंधन, बहकर नष्ट हो गयी थी। बाढ़ के पानी के साथ भूमि भी सिंचाई से वंचित हो गयी थी। इस त्रासदी से पेड़ों के प्रति लोगों के जीवन में प्रेम अधिक हुआ। उन्हें महसूस हुआ कि पेड़ों की उनके जीवन में क्या भूमिका है।

वनों के नजदीक रहने वाले लोगो को वन सम्पदा के माध्यम से सम्मान जनक रोजगार देने के उद्देश्य से कुछ पहाड़ी नौजवानों ने 1962 में चमोली जिले के मुख्यालय गोपेश्वर में दसौली ग्राम स्वराज संघ बनाया था। उत्तर प्रदेश के वन विभाग ने संस्था के काष्ठ कला केन्द्रों को 1972-73 के लिए पेड़ देने से मना कर दिया था। पहले यह पेड़ सिर्फ नजदीक रहने वाले ग्रामीणों को मिलते थे। गांव वाले इस हलकी और बेहद मजबूत लकड़ी से अपनी जरूरत के मुताबिक खेती बाड़ी के औजार बनाते थे। गांव के लिए यह लकड़ी बहुत जरूरी थी, लेकिन इस बीच पता चला कि वन विभाग ने खेलकूद का सामान बनाने वाली इलाहाबाद की साइमन कंपनी को गोपेश्वर से एक किलोमीटर दूर मंडल नाम के वन से वह पेड़ काटने की इजाजत दे दी है। जहां वनों के ठीक बगल के गांव तक के लोगों को इन पेड़ों को काटने की इजाजत नहीं दी जाती थी वहीं इलाहाबाद की कंपनी को खिलौनों के लिए इन्हें काटने की इजाजत दे दी गयी। दरअसल दसौली ग्राम के लोग चाहते थे कि पहले खेती की जरूरतें पूरी की जाएं उसके बाद खिलौने। इसी के साथ वे चाहते थे कि वन सम्पदा के द्वारा वनवासियों को रोजगार भी दिया जाये ताकि वनों की सुरक्षा के प्रति उनका प्रेम बना रहे।

चिपको आंदोलन का मूल केंद्र रेनी गांव जिला चमोली था। वन विभाग ने इस क्षेत्र के करीब दो हजार पेड़ साइमन कंपनी को ठेके पर दिए थे, जिसकी खबर मिलते ही चंडी प्रसाद भट्ट के नेतृत्व में फरवरी 1974 को एक सभा बुलाई गयी, जिसमें लोगों को जागरूक किया गया कि पेड़ गिराये गए तो हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। यह पेड़ उन लोगों के लिए सिर्फ चारा, जलावन और जड़ी-बूटी की जरूरत पूरी ही नहीं बल्कि मिट्टी का क्षरण भी रोकते हैं।

इस सभा के बाद गांव वालों ने रेनी जंगल की कटाई के विरोध में जुलूस निकाला और जब आंदोलन जोर पकड़ने लगा तो विद्यार्थियों ने भी जुलूस निकाला। तभी सरकार ने यह घोषणा की कि चमोली में सेना के लिए जिन खेतों का अधिग्रहण किया गया था वे अपना मुआवजा ले लें। गांव के लोग मुआवजा लेने चमोली गए वहीं दूसरी ओर आंदोलनकारियों को बातचीत के लिए गोपेश्वर बुला लिया गया। इस मौके का लाभ उठाते हुए ठेकेदार और वनाधिकारी जंगल में घुस गए। गांव में केवल महिलायें ही बची थीं, लेकिन उन सब ने हिम्मत नहीं हारी और बिना जान की परवाह किये दो दर्जन से अधिक औरतों ने गौरा देवी के नेतृत्व में चिपको आंदोलन शुरू कर दिया।

सवालों के घेरे में देश की सुरक्षा

सौरभ मिश्रा

देश की सुरक्षा का जिम्मा किस पर है। इस सवाल के जवाब में हम सब का एक ही उत्तर होगा। हमारे सैनिक! लेकिन सैनिकों की सुरक्षा का जिम्मा किस पर है?क्या वो इस जिम्मेदारी को भलीभांति निभा रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने की कोशिश मैंने भी की और जो कुछ सामने आया वो चौकाने वाला है। आप भी जान लें। आम तौर पर जब देश की सुरक्षा का सवाल आता है। तब सैनिकों के पक्ष में बड़े-बड़े सड़क से लेकर संसद तक गूंजते हैं। बड़े-बड़े वादे किए जातें हैं, लेकिन नतीजा वही 'ढाक के तीन पात।'

इसी का यह परिणाम है कि जम्मू-कश्मीर केसुंजवां आर्मी कैंप में पिछले दिनों घुसकर आतंकवादियों ने हमला कर दिया, जिसमें पांच जवान, एक हवलदार और उसकी एक बेटी शहीद हो गई। इस हमले के पीछे का कारण यह सामने आया कि जम्मू-कश्मीर में तकरीबन 16 पाकिस्तानी आतंकवादी कैद हैं, जिन्हें छुड़ाने के लिए ये हमला किया गया है। यह बात भी सामने आई है कि इसमें से एक आतंकवादी को छुड़ाया भी जा चुका है। वैसे यह कोई एक मामला नहीं है। ऐसा ही एक वाकया एक जनवरी 2018 को पुलवामा में भी घट चुका है। यह हमला सीआरपीएफ कैंप पर हुआ था, जिसमें तीन कैप्टन समेत पांच जवान शहीद हो गए थे। इससे यह साफ पता चलता है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था कितनी चरमराई हुई है।

जैसा कि आप सभी को याद होगा कि 29 सितम्बर 2016 को पाकिस्तान में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया गया था, जिसमें तकरीबन 178 मिलिटेंट मारे गए थे। इसके बाद यह दावे किए जाने लगे थे कि पाकिस्तान इस कार्रवाई से सबक लेगा और संघर्ष विराम उल्लंघन में कमी आएगी। लेकिन हुआ इसका उलटा। संघर्ष विराम उल्लंघन की वारदात बढ़ती ही गई। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 29 सितम्बर 2016 से एक जनवरी 2018 तक तकरीबन 860 बार युद्ध विराम उल्लंघन हो चुका है। जबकि सर्जिकल स्ट्राइक से पहले यह आंकड़ा 221 था, जिसमें 72 प्रतिशत की वृद्धि आयी है। इसी के कारण भारतीय सशस्त्र बलों के अब तक 90 जवान शहीद हुए। इसके अलावा 17 दिसम्बर 2017 तक हुए युद्ध विराम उल्लंघन में 41 आम नागरिक और 23 सशस्त्र बलों के जवान मारे गए। इसी के साथ 383 से अधिक जवान घायल हुए। इससे यह साफ जाहिर होता है कि सैनिकों और आम नागरिकों की सुरक्षा के साथ कितना भद्दा मजाक किया जा रहा है।

तमाम वादे धरे के धरे रह गए। केवल बड़बोलापन देखने को मिल रहा है। संसद में सैनिकों और देश की सुरक्षा के नाम पर राफेल का झुनझुना बज रहा है। अरबों रुपये दबाने की फिराक है? इस सब में हम, आप और सैनिक सब के सब खतरे में हैं। अब भी वक्त है कि अपने लिए न सही तो उन सैनिकों की सुरक्षा के लिए सवाल उठाइए जो आपके लिए दिन-रात सरहद पर गोलियां खा रहे हैं।

पुस्तक मेले में धार्मिक स्टालों की धूम

नीरज सिंह

आप सभी में से अधिकतर तो इस मेले में घूम कर आ ही गए होंगे और कुछ किताबों का पूरा पिटारा अपने घर लेकर आए होंगे। यहां हमारा भी जाना हुआ। जब हमने मेले में आवागमन किया तो शुरू में ही मन हट सा गया। इस पुस्तक मेले में अच्छी किताबों के साथ आपको धार्मिक ग्रन्थों का भी पूरा उबाल देखने को मिला। अगर आप धर्म प्रेमी होंगे तो शायद खरीद भी लिए होंगे। अगर आपका हाल नम्बर 12 में जाना हुआ होगा तो एक बार अपना ध्यान वहां के पुस्तक विक्रेताओं पर गया होगा। ध्यान दिया होगा तो आपको हाल के चारों कोनों पर धार्मिक स्टाल नजर आये होंगे, जिन पर बड़ी मात्रा में धार्मिक पुस्तकें मौजूद थीं। उन्हें बेचा जा रहा था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि पुस्तक मेले पर ये सभी महान व्यक्ति अपने अपने धर्मों से जुड़े ग्रन्थों को मात्र एक आम पुस्तक के रूप में बेचने में लगे थे।

ऐसा दृश्य देख कर लगा कि वो दिन बहुत जल्द आने वाला है जब पुस्तक मेले में साहित्य और समाज विज्ञान की किताबें कम धार्मिक किताबें अथवा सामग्री ज्यादा नजर आएगी। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि आप वहां पर बच्चों को क्या उनके बचपन से ही धर्म में बांधने लगे हैं। जिन बच्चों को अच्छी और ज्ञानवर्धक किताबें पढ़नी चाहिए उन्हें कूपमंडूक बनाने वाली किताबों में उलझाया जा रहा है। विश्व पुस्तक मेला का मान रहा है। देश ही नहीं उसमें विदेशों से आने वाले प्रकाशकों की धूम रही है वह अब एक धार्मिक बोतल के अंदर बंद होता नजर आने लगा है। इस बार के पुस्तक मेले को देख कर कुछ पंक्तियां मन में घुमड़ने लगीं उनके जरिये अपनी बात खत्म कर रहा हूं-

विश्व पुस्तक मेले में क्या-क्या देख आए हम
बाइबिल, कुरान और गीता को
बिकते देख आए हम
धर्मों के एक बोतल में
ज्ञान को जाते देख आए हम
जो कभी बिकता नहीं
उसे बिकते देख आए हम

माँ के आँचल में बचपन

प्रज्ञा सैनी

जिस मां के आंचल मे सारा बचपन बिताया
आज उसी आंचल को मैं छोड़ आया
जिसमें था मेरा संसार समाया
हर मुसीबत में जिसने मेरा साथ निभाया
आज कैसे उससे ही मैं मुसीबतों के सहारे छोड़ आया
बुरा लगा जब बचपन में पापा ने था मां पर हाथ उठाया
ये कह कर कि मुझे क्यों रुलाया
फिर कैसे आज मैं
मां को समय की मार खाने को छोड़
जिसने था दूध पिलाया आज उसे ही भूखा छोड़ आया
मां ने ही तो मुझे प्यार से इतना बड़ा बनाया
आज उससे ही मैं एक झोपड़ी में छोड़ आया
उसके प्यार को मैं एहसानों का नाम दे आया
आखिर क्या गुजरी होगी उस मां की ममता पर
जब मैं ये एहसान चुकाने की बात कह आया
जिसने खुद भूखी रहकर मुझे हर चीज से नवाजा
कैसा लगा होगा जब मैंने उसी के घर का
उसके लिए बंद किया दरवाजा
उसके प्यार को हमने उसकी खुदगर्जी से तौल दिया
क्या किया उसने ऐसा जो हमने उससे ऐसा बोल दिया
हम जब उससे देखते थे
तो कहते थे फिर आ गई बूढ़ी हाय
पर वो फिर भी हमें देती रही दुआएं
हम रिश्तों को पैसों से तौल आए
काश समझ जाते प्यार का कोई मोल नहीं है भाई
मां ने प्यार की डोरी से रिश्तों को बुना
और हम रिश्तों के बीच में
नफरत की दीवार खड़ी कर आए
हमारी खुशी की खातिर जो खून के आंसू रोई
वो ही आज हमारी वजह से दुनिया भर में रुस्वा है हुई
जिसने हमें इतना मजबूत बनाया
आज उससे ही कमजोर कर आया
हम में ही तो मां की जान बसती थी
हमारी हर नादानी पर जो हंसती थी
उससे ही आज अकेला छोड़ आए
जो हमारी खातिर जिया करती थी

वो पर्दा बड़ा गंभीर था

सौरभ मिश्रा

वो पर्दा बड़ा गंभीर था
उसमें आबरू थी
वो जानता था! असलियत
चमड़ी के अंदर की भी
और बाहर की भी
ढकता था जिस्म
पर उजागर करता था 'नकाब' भी
वो गली के हर कोने से वाकिफ था
वो जानता था 'सन्नाटे' की दहशत को भी
वही तो था जिसने पहले-पहल देखी थी
ठिठकती सांसों को
खौफजदा आबरू को
नोचते-घसोटते हाथों को
ताड़-ताड़ करते जिस्म के हर एक कोने को
कूड़े के ढेर की तरह पड़ी लाशों को
बर्बरता के खौफनाक मंजर को
वो पर्दा बड़ा गंभीर था
उसमें आबरू थी

गतिविधियों के केंद्र में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

डॉ. राकेश कुमार

हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग ने सत्र 2017-18 में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से 'नया मीडिया अवसर और चुनौतियाँ' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 25 अगस्त 2017 को किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता थे वरिष्ठ पत्रकार सतीश कुमार सिंह। प्रधानाचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री सतीश कुमार सिंह जी के योगदान को रेखांकित किया तथा वर्तमान समय में मीडिया की चुनौतियां पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विकास में आदरणीय सतीश कुमार सिंह जी मार्गदर्शन को आवश्यक बताया। विभाग के प्रभारी डॉ. राकेश कुमार ने वरिष्ठ पत्रकार सतीश कुमार सिंह जी का परिचय देते हुए बताया कि वरिष्ठ पत्रकार सतीश कुमार सिंह एनडीटीवी, एबीपी न्यूज और आज तक जैसे बड़े समाचार चैनलों में काम कर चुके हैं। विषय का प्रवर्तन करते हुए डॉ. राकेश कुमार ने वर्तमान समय में मीडिया को सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम और लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कहा। 21वीं सदी के नए मीडिया के विषय में उनका कहना था कि आज का नया मीडिया परंपरागत मीडिया से कहीं आगे जा चुका है तथा नये मीडिया ने आमजन के हाथ में मीडिया की बागडोर दे दी है। यह एक तरफ शक्ति है तो दूसरी तरफ एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी भी। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता सतीश कुमार सिंह जी ने अपने विस्तृत अनुभवों से छात्रों से साझा करते हुए मीडिया के क्षेत्र में अवसरों तथा उसकी चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज नये मीडिया की बदौलत कोई भी व्यक्ति अपने स्मार्टफोन के जरिये पत्रकार हो सकता है। नये मीडिया ने पुराने मीडिया को रिप्लेस तो नहीं किया है परंतु बड़ी चुनौती अवश्य पेश की है। उन्होंने छात्रों को एक बेहतर पत्रकार बनने के लिए प्रेरित किया। छात्रों से संवाद के दौरान उन्होंने मीडिया के क्षेत्र से जुड़ी हुई छात्रों की अनेक शंकाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सुभाष चंद डबास ने मीडिया के क्षेत्र में आ रहे परिवर्तनों पर विस्तार से चर्चा की तथा मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में हिंदी तथा हिंदी पत्रकारिता विभाग के लगभग 150 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी पत्रकारिता के तृतीय वर्ष की छात्रा सुश्री शालू शुक्ला ने किया।

29 सितम्बर 2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर नेहरू युवा केंद्र और हिंदी विभाग रामलाल आनंद कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया

गया, जिसमें बड़ी संख्या में छात्रों ने भाग लिया। विषय था 'हमारा समय और हिंदी'। हिंदी पत्रकारिता के प्रथम वर्ष के छात्र आशुतोष मिश्रा ने प्रथम स्थान, द्वितीय वर्ष की छात्रा श्रेया उत्तम ने दूसरा तथा बीए प्रोग्राम के हितेश कुमार ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में हिंदी विभाग की डॉ. अर्चना गौड़, डॉ. राजेश कुमार गौतम, डॉ. अटल तिवारी निर्णायक की भूमिका में थे। इस अवसर पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. सुभाष डबास जी ने कहा कि विद्यार्थियों को अनुशासित रह कर देश और मातृभाषा के विकास के लिए काम करना चाहिए। इस कार्यक्रम के आयोजन में प्रथम वर्ष के छात्र महेंद्र कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दिनांक 26 अक्टूबर 2017 को हिंदी विभाग की ओर से विद्यार्थियों के लिए दलितों के सामाजिक उत्पीड़न और शोषण पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री 'द अनटचेबल इंडिया' का प्रदर्शन भी किया गया। इस फिल्म में भारतीय समाज की विसंगतियों और जातिगत हिंसा को बखूबी प्रदर्शित किया गया था। कार्यक्रम के पश्चात अनेक छात्रों ने इस फिल्म के माध्यम से भारतीय समाज की जाति व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा की। हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए विभाग ने डॉ. अटल तिवारी के मार्गदर्शन में समाचार पत्र के लेआउट तथा हिंदी टाइपिंग पर विशेष कार्यशालाओं का भी आयोजन किया।

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम हिंदी में विज्ञान और विज्ञान की हिंदी (हिंदी में विज्ञान पत्रकारिता की सम्भावनाएं) विषय पर था। 25 नवंबर 2017 को आयोजित इस कार्यक्रम में हिंदी में विज्ञान के प्रसार को आगे बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कुलदीप शर्मा और देवेंद्र मेवाड़ी ने भाग लिया। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य डॉ. राकेश गुप्ता ने वक्ताओं का स्वागत फूल भेंट कर किया। विषय की चर्चा करते हुए आदरणीय प्रधानाचार्य ने अपने निजी अनुभव को साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार उनकी प्रारंभिक विज्ञान की शिक्षा भी हिंदी में हुई परंतु उच्च शिक्षा का माध्यम चूंकि अंग्रेजी रहा इसलिए वे भी बाद में अंग्रेजी माध्यम से पढ़े। उन्होंने कहा कि देश में यदि विज्ञान को प्रचारित और प्रसारित करना है और विज्ञान में मूल लेखन को प्रेरित करना है तो इसके लिए मातृभाषाओं से अधिक सक्षम कोई और माध्यम नहीं हो सकता। उन्होंने छात्रों से अनुरोध भी किया कि वे आने वाले वर्षों में हिंदी में विज्ञान के प्रसार के लिए काम करें। विभाग के प्रभारी डॉ. राकेश कुमार ने कुलदीप शर्मा और देवेंद्र मेवाड़ी जी का विस्तृत परिचय दिया तथा विज्ञान के क्षेत्र में और उसके प्रसार में उनके योगदान को छात्रों के सम्मुख रखा। उन्होंने हिंदी में विज्ञान के महत्व और विज्ञान की हिंदी की कठिनाइयों को सामने रखा। उनका कहना था कि आजादी के बाद जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था अपनाई गई उससे हिंदी तथा मातृभाषाएं उच्च शिक्षा के क्षेत्र से बाहर कर दी गई परंतु आज समय है कि हम हिंदी के माध्यम से विज्ञान को जन जन तक पहुंचाएं। वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप शर्मा ने विज्ञान के अपने अनुभवों को छात्रों के साथ साझा करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में आ रहे बदलावों के बारे में छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने कृषि विज्ञान में नई विकसित हाइड्रोपोनिक्स तकनीक के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी भी दी। संगोष्ठी के दूसरे वक्ता डॉ. देवेंद्र मेवाड़ी हिंदी में विज्ञान के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने बताया विज्ञान का प्रसार हिंदी में अधिक सरल तरीके से किया जा सकता है। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को विज्ञान पत्रकारिता के क्षेत्र में आने के लिए भी प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन तपन सिंह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अर्चना गौड़ ने किया। विभाग के शिक्षकों डॉ. सुभाष डबास, डॉ. संजय कुमार शर्मा, डॉ. राजेश गौतम, डॉ. अशोक मीणा, डॉ. दिनकर सिंह, डॉ. लवकुश, डॉ. लक्ष्मी के साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस संगोष्ठी में भागीदारी की। 8 और 9 फरवरी 2018 को विभाग ने दो दिवसीय नाट्य संगोष्ठी और कार्यशाला का आयोजन किया। वक्ता थे प्रो. नरेन्द्र मोहन, प्रो. रमेश गौतम, प्रो. मीराकांत और डॉ. रमा यादव। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अर्चना गौड़ ने किया। विभाग के विद्यार्थियों ने इस वर्ष एबीपी न्यूज समाचार चैनल की यात्रा की। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र के अनुसंधान को जानने को विद्यार्थी हरियाणा के चिड़ाना स्थित डाबर आयुर्वेट के शोध संस्थान भी गये।

किसान बेचारा

प्रीति

क्यों समय है इतना बलवान
क्यों रौंद रहा है सपना सारा
आज बना किसान बेचारा
हर तरफ दंगे अग्नि की ज्वाला
मारपीट का आलम है ये अब सारा
हर दृश्य हलचल भरा
हर आदमी डरा हुआ
खड़ा हुआ छोड़ भागा गांव
शहर के आलम देखने को
छोड़ मां का आंचल नया ख्वाब बुनने को
निकल पड़ा था दिल्ली का नया ज्ञान सीखने को
नया दीप जलने को
इस मिट्टी से बाहर निकलने को
इस गांवों की खेती से
काले पीले चहरे की धूल
मीठे पानी से धोने को
थक गया हूं
ले हल बैल को गाड़त गाड़त
अब बन गया किसान बेचारा
इस कमाई से पेट नहीं पलता अब बच्चों का
फैक्टरी में चलता हूं कुछ कमाने को
महीने की पगार तैयार होती होगी मिलने को
चैन की होगी नींद रातों को
कोई नहीं होगा ये कहने को
चल खेत में पहरा लगाने को
जगाने वाला नहीं होगा कोई
खेती बाड़ी में पहरा देने को
उड़ चला हूं रात के अंधकार में
रातों के तारे गिनने को
नहीं होगा वहां पर कोई लुभाव मांगने को
क्योंकि वह सब होंगे साथ देने को
मैं भी उन्हीं में मिल उन्हीं का जैसा बन जाऊंगा
फिर नए सिर से जिंदगी बिताऊंगा
शांत था शहर
था गुमशुम शहर अपने अपने काम में
रोज की भाग दौड़ में
चली आंधी फिर एक अचानक
उतरा जन आक्रोश इस फिल्म सिटी में
बन गई एक फुटेज कैमरे की आड़ में
आया एक असामाजिक तत्व कहां पता नहीं
ये तो नहीं था सपना मेरा
हर तरफ देंगे अग्नि की ज्वाला
मारपीट का कैसा आलम अब सारा
ये किसान बेचारा
चल रहा उपवास करने आज ये नेता कैसे हमारा
मेरी आहों के समुद्र में अब बन गया गढ़ा गहरा
ये किसान बेचारा
आया था शायद ये देखने को
कहीं हाहाकार मचाने को, सपने बुनने
हिंसा प्रदर्शन देखने को
सेना को पीटते देखने को
जलते घर को फूंकने को
बिखरते हर अन्न के दाने को
रोती मां की किलकारी सुनने को
भड़काऊ नेता के भाषण सुनने को
झूठी छत्रछाया लेने को
पता नहीं प्रतिष्ठा की आग बुझाने को
या आगे लगने को
ये किसान बेचारा
मन वेदना से भरता जा रहा है
अब उपवास करने को जी चाहता है
लटका लूं जान को तख्ते पर
जब उस मजबूर से ये सुनता हूं
कर्ज बहुत है बेटी को कलेक्टर बनाने को
अन्नदाता का नमक चुकाना है
जो अभी बकाया है
आज बना मैं किसान क्यों सिर्फ दंगा बढ़ने को
क्यों लिया रूप हैवानियत दिखाने को
क्यों किया अग्नि लगाने गांव-गांव फैलने को
तोड़-फोड़ और दूध, प्याज गिराने को
एक छोटी सी तो मांग थी
कर्ज किसानी ऋण बकाया माफ करने को
आज उतरा हूं लाखों बसों को फूंकने को
राजनीति उपवास का ढोंग रचाने को

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के तृतीय वर्ष के विद्यार्थी

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी

रामलाल आनंद महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

बेनितो जुआरेज मार्ग, नई दिल्ली-110067